❀ श्री गणेशाय नमः ❀

# पहाड़ी लोकगीत की

## पुरानी झलक

## देवर भाबी सम्बाद

## जोड़-गीत

सर्वा-धिकार सुरक्षीत

रचेता व प्रकाशक—

**मथुरादत्त बेलवाल**

सुपुत्र स्व० प्रेमबल्लभ बेलवाल

चिनपुर कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी [नैनीताल] उ० प्र०

Rs. 10-00

सन् १९९१

# समाज सेवी का परिचय

पाठक बन्धुओ, जय श्री राम।

आपके स्नेह और शुभकामनाओं के कारण अपनी यह १८वीं पुस्तक आपके कर कमलों में भेज रहा हूं।

नैनीताल जनपद के एक पिछड़े दूरदराज पर्वतीय गांव दुदुली जहां आज भी मोटर मार्ग, हाईस्कूल अथवा अस्पताल जैसी प्राथमिक सुविधायें उपलब्ध नहीं है, में आज से ६२ वर्ष पूर्व जन्मा मुझ अभागे को विद्यालय के कभी दर्शन नहीं हुए। मैंने पुरोहित से सुना कि "विद्या ददाति विनयम्" (धार्मिक विद्या से विनय की प्राप्ति होती है) - इसी के वशीभूत कुछ पढ़े-लिखे लोगों से सतसंग किया और ऐसे ही कुछ दयावान सज्जनों से किशोर उम्र में अ - आ, क - ख, बारखड़ी, गिनती सीखी। कुछ समय बाद मेरा सम्पर्क अपनी ग्रामसभा के तत्कालीन ग्राम प्रधान श्री भवानी दत्त शर्मा के माध्यम से १९५२ में श्री नारायण दत्त तिवारी जी से श्री जीवानन्द बिंबयाड़ी जी के निवास पर हुआ और मैंने उनकी कुशाग्रता के वशीभूत उनके समाजवादी चुनाव में एक कार्यकर्ता के रूप में काम करना प्रारम्भ किया। माँ सरस्वती की असीम अनुकम्पा से मुझे अच्छा कण्ठ (गला) गीत-गुनगुनाने के लिए मिला। लोक गीतों की तुकबन्दी में उन दिनों गा - गा कर सोशलिस्ट पार्टी का प्रचार करता रहा। इसी चुनाव अभियान में मेरा सम्पर्क स्वाधीनता सेनानी श्री नन्दन सिंह बिष्ट उनकी धर्मपत्नी श्रीमती बसन्ती देवी बिष्ट से हुआ। जिन्होंने मुझे अपने गीतों को लिपिबद्ध करने के लिए कहा। लेकिन १८-१९ वर्षों तक मैं इस दिशा में कोई ठोस प्रयास नहीं कर पाया। १९७१ में मैं दुदुली

छोड़कर हल्द्वानी के उपनगर चीनपुर कुसुमखेड़ा में श्री डुँगर देव जो के मकान में किराये पर आ गया। वहीं अब भी रह रहा हूं। यह कुटिया मेरे स्वाध्याय का केन्द्र है। जहां रहकर मैंने अब तक लोकगीतों (झोड़ा, रमौला, भगनौला, बैर, होली और प्रेम गीत, प्रेमकथा, शकुनगीत, ईस्ट वन्दना आदि) की किताबें पाठकों को समर्पित की हैं। "बाला गोरिया (ग्वेल देवता) की अमर कथा" जो ९२ पृष्ठ की पुस्तक है—बहुत लोकप्रिय हुई जिसके चार संस्करण चुके हैं। पांचवां संस्करण प्रकाशनाधीन है। मेरे इस प्रयास की कई लोगों ने सराहना की जिससे मुझे अपना काम आगे बढ़ाने में बड़ी मदद मिली। इन सराहना कर्ताओं में स्व० श्री हीरा बल्लभ बेलवाल, नगर पालिक हल्द्वानी-काठगोदाम के अध्यक्ष व विधायक, श्री पुरुषोत्तम पालीवाल कुमाँऊनी साहित्य सदन दिल्ली, श्री लीलाधर पाण्डे अरायज-नवीस हल्द्वानो, श्री ललित किशोर पाण्डे एडवोकेट हल्द्वानी, सोवन सिह अधिकारी एडवोकेट के नामों का उल्लेख करना में अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

अपनी सभी पुस्तकों को सुरहृदय पाठकों तक पहुंचाने में मुद्रण एवं प्रकाशन में जो अतुलनीय सहयोग मुझे दिया है—उनका भी मैं आभारो हूं। सहयोगी, हल्द्वानी से भी मुझे सहयोग मिला। आशा है पाठक गण इस पुस्तक के गुण – दोषों से मुझे परिचित करायेगे।

आपका ही,
मथुरा दत्त बेलवाल अकेला

# ❋ निवेदन ❋

## बाला गोरिया ग्वेल देवता

की अमर कथा के

प्रकाशन हेतु आप सभी श्रद्धा प्रेमियों से अपील

मान्यवर,

आप की आसींम कृपा से पांचवां संस्करण जो १०००० पुस्तकों का होना है आर्थिक कमी पर आपसे सहयोग मांगता हूँ ।

भेंट स्वरूप जो दान राशि मनिआर्डर से २५) रुपया या अधिक भेजेंगे पूरा पता लिखें जो पुस्तकों में प्रकाशित हो जाय एक प्रति आपको प्रेषित की जाय । में उनका सभार व्वक्त करता हूँ जो मेरे जैसे अशायन की सहायता कर रहे हैं ।

मथुरादत्त बेलवाल
चिनपुर कुसमखेड़ा
पो० आ० हरिपुरनायक
हल्द्वानी नैनीताल

कृपया अपना सुझाव भी भेजें ।

बाला गोरिया गोलू देवता के पाँचवें संस्करण के प्रकाशन हेतु डाक द्वारा भेजे वालेदान दाताओं की सूची-

| नाम व पता | रुपये |
|---|---|
| श्री नवीन चन्द्र सिंह, सिविल लाइन, हल्द्वानी- | ५१-०० |
| श्री प्रताप सिंह बर्गली, ठेकेदार, ज्योति होटल, हल्द्वानी— | ५१-०० |
| श्री केशव दत्त जोशी, कुसुमखेड़ा— | २५-०० |
| श्री जीवानन्द दुकानदार, देबोधूरा— | २५-०० |
| श्री देवी दत्त भट्ट, ठेकेदार, कुसुमखेड़ा- | २१-०० |
| श्री भीम सिंह बिष्ट, बिठोरिया नं० १ लालडांठ- | २५-०० |
| श्री पान सिंह भोजक, चीनपुर- | २५-०० |
| श्री शंकर दत्त भट्ट, बिठोरिया नं० १ - | ११-०० |
| श्री दिवान सिंह, दुकानदार, बिठोरिया नं० १ | ११-०० |

नोट-पाँचवें संस्करण में भी आपका नाम छपेगा, मैंने यहां पर भी आपका नाम देना आवश्यक समझा।

धन्यवाद!

# "माता पिता गुरु देवता"

## १— माँ का स्थान :

प्रिय पाठको,

ससार में जन्म लेकर मनुष्य मात्र को अपनी सभ्यता व संस्कृति के अनुसार समाज में प्रचलित मान्यताओं में सर्व प्रथम अपनी जननी को ही श्रेष्ठ मानना चाहिए। चूँकि जो स्थान जीव मात्र को इस धरा पर आने का जननी को है वह किसी अन्य का नहीं। इसलिए हमें अपनी पूज्य जननी की प्रत्येक आज्ञा का पालन कर कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे माँ के मन में हमारे तथा हमारे कार्य के प्रति ठेस लगे। माँ की प्रत्येक आज्ञा का पालन करना ही हमारी मुख्य पूजा होती है।

## २— पिता का स्थान :

इसके बाद श्रेष्ठ स्थान पिता का है। जिस प्रकार माँ जन्म दायिनी है उसी प्रकार पिता जन्म दाता हैं। हमारी सभ्यता के आधार पर माता के बाद पिता ही श्रेष्ठ व पूज्य है।

## ३— गुरु का स्थान :

सज्जनों जिस प्रकार माता पिता सर्व प्रथम पुजनीय है उसी प्रकार हमें विद्या हुनर, अस्त्र शस्त्र यानि कि प्रत्येक कार्य जो हम अपने जीवन यापन के लिए करते हैं और जिससे हम अन्न वस्त्र समाज में मान सम्मान आदि प्राप्त करते हैं उसे देने वाले गुरु हैं। यदि हमारी मानवता जिस प्रकार सभ्यता की ओर बढ़ी और समाज ने अपने हित के लिये जिन नियमों को लागू किया

उसे भी हमारे गुरु जनों ने किया। यदि गुरु नहीं होते आज हम ही क्या सारा संसार तथा समाज को हम इस रूप में नहीं देख पाते और संसार तथा समाज का कुछ और ही रूप हमें देखने को मिलता। आज जिस समाज ने या व्यक्ति ने गुरु के महत्व को नहीं समझा उसमें तरह - तरह की बुराईयाँ पैदा हुई और वह समाज तथा व्यक्ति पतन के गर्द में मिल गये और भविष्य में मिलते रहेंगे। इसलिए तीसरे स्थान पर गुरु जन पूज्य हैं।

## ४— देवता :

संसार में अलग-अगल धर्म अलग-अलग जातियाँ अपने अपने तरीके से कई देवी देवताओं को मानते हैं। परन्तु वास्तव में देखा जाय तो हमें इस प्रकृतिक सौन्दय तथा अपने जीवन को सुरक्षित रखने के लिये पाँच महान देवताओं की पूजा करना मनुष्यता का परम कर्तव्य है।

१- पृथ्वी- जिसमें हम जन्म लेते हैं और अपना शैशव-काल, बचपन, जवानी, बुढ़ापे तक इसी पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले आनाज फल फूल तथा अन्य सभी खाद्य सामाग्री का सेवन करके जीवित रहते। यदि पृथ्वी पर खाद्य सामाग्री पैदा न होती तो हम कदापि जीवित नहीं रह सकते।

२-हवा- जन्म लेते से पूर्व गर्भवस्था में रहे समय भी जीव को साँस लेने के लिए हवा की आवश्यकया होती है। यदि हमें कुछ ही समय तक हवा न मिले तो हम कदापि जीवित नहीं रह सकते। इसके अलावा हमारी आवाज एक दूसरे तक हवा के द्वारा ही पहुंचती है। हवा का पृथ्वी के बाद दूसरा स्थान है।

३-सूर्य- सूर्य देव मात्र तथा वनस्पत्तियों का जीवित रखने के लिये प्रतिदिन इस संसार में विचरते हैं और अपनी किरणों से

जीवों तथा वनस्पतियों को बढ़ाने में अपना योगदान देते रहते हैं। यदि सूय देवता नहीं होते तो यह संसार अन्धकारमय होता। किसी प्रकार जीव व वनस्पति जीवित भी रहते तो हवा में भटकते रहते। इसलिए देवताओं में तिसरा स्थान सूर्य देव का है।

**४-जल-** जल के बिना जीव व वनस्पति जिस प्रकार सूर्य देव की रोशनी न मिलने के कारण जीवित नहीं रह सकते। ठीक उसी प्रकार जल के बिना जीव व वनस्पति जीवित नहीं रह सकते जल हमारे जीवन में हमें जन्म से लेकर मृत्यु तक अनिवार्य है। जल से ही हमें खाद्य सामाग्री प्राप्त होती है और जल का ही प्रयोग करते हैं। इसलिए देवताओं में चतुर्थ स्थान जल का है।

**५-अग्नि-** अग्नि देव मनुष्य के जीवन में जब से मानवता का विकास प्रारम्भ हुआ तभी से आ चल रहा हैं मनुष्यता के विकास से मनुष्य ने जब अपने उदरपूर्ति के लिये खाद्य पदार्थों को पकाकर खाना सीखा तभी से अग्नि का प्रचलन चला आ रहा है। आज हम अग्नि से जितने भी कार्य कर रहे हैं वे सब अग्नि देव की शक्ति का प्रमाण है। रेल, मोटर हवाई जहाज, कल-कारखाने आदि अग्नि देव की शक्ति से ही चलते हैं और यहाँ तक कि संसार के कुछ धर्मों के लोग मृत्यु होने पर अग्नि से ही दाह संस्कार करते हैं। इसलिए पांचवा स्थान अग्नि देव का है।

इसीलिए पाठक गणों से मेरा निवेदन है। कि मेरे तुच्छ बुद्धि के अनुसार उपरोक्त माता, पिता, गुरु तथा पांचों देवताओं को पूजना मनुष्य का परम कर्तव्य है। अपनी अल्प बुद्धि से उपरोक्त विचार जो मैंने व्यक्त किये हैं उसमें जो भी त्रुटि हो उनसे अवगत कराकर मुझे मार्ग दर्शन करायेंगे।

भारत की

# "दहेज प्रथा एक कुरीति है।"

सज्जन बन्धु,

भारत की दहेज प्रथा ने कितने ही अगन्य अत्याचार किये हैं। जिनके परिणाम समाज में जन्मी हमारी अनेकों नारियों को भुगुतान पड़ता है। जिसका परिणाम हत्या तथा आत्म हत्या तक बहिन बेटियों की होता रही हैं और दहेज प्रथा को खत्म न करने पर भभिष्य में होती रहेंगे तथा अगन्य बहिन बेटियों को या तो जीवन भर कुआरी रहना पड़ता है और आज के वैज्ञानिक युग में तो इसने अपना विक्राल रुप धारण कर लिया है। आये दिन हम समाचार पत्रो में पढ़ते हैं कि अयुक कन्या के पिता ने दहेज को रकम पूरी न देने के कारण बेचारी नव-वधू को या तो घर से निकाल दिया जाता है या उसे जोवन भर हैरान रहना पड़ता है। यदि हुमारे समाज ने इस प्रथा का सन्मूलन नाश नहीं किया तो भविष्य में भी बढ़कर अत्याचार महिला समाज के ऊपर होते रहेंगे। तथा इसे खत्म करने का श्रेय जितना लड़के की माता को होगा उतना किसो अन्य को नहीं।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के उपलक्ष में सभी महिलाएं यह संकल्प लें कि हम अपने पुत्रों के विवाह में कोई दहेज नहीं लेंगे। यदि सभी मातए इस सकल्प पर दृढ़ रहें तो दहेज प्रथा का अति शीघ्र अन्त हो सकता है।

मैं विशेष माता बहिनों व नव युवतियों तथा नवयुवकों से निवेदन करता हूं कि इस दहेज प्रथा की कुरीति से छुटकारा पाने के लिये एक दृढ़ संकल्प लें कि समाज में इस कुरीति का प्रचार चलायें जिससे इस प्रथा का शीघ्र अन्त हो जाय।

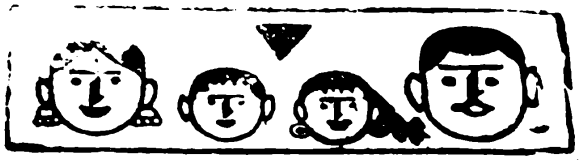

# घर कि सांन छोटा परिवार भाल इन्सान

परिवार निजोजन सफल राष्ट्र के लिये छोटा परिवार जरूरी हैं। महिला व बच्चों के स्वास्थ में सुधार करने तथा पूरे राष्ट्र को अधिक शक्तिशाली व गतिशील बनाने के लिये बहुत आवश्य है। आज समय की पुकार हैं सब को छोटे परिवार रखने की जरूरत है और बच्चों को शिक्षित किया जाना चाहिये छोटे परिवार से होने बाले लाभ के बारे में बताया जाय तो परिवार नियोजन के लिये लोगो को तंयार करना कठिन कार्य नहीं है।

## :— कविता :—

छोटो परीवार, घरे कि सान ।।
भन भुला अब तींकोंनो विशाव ।
लुप कांपर चालीया छन ।।
इएतो नाम, भुलिया भन ।।
परिवार कल्याण जाला पें जब ।।
महिला डाक्टर, बताल शब ।।
कमिक होलों, छोटो परिवार ।।
बिधी बताला महिला डाक्टर ।।
खुश हाल रवी, नान परिवार ।।
साप सुन्दर, शब होस्यार ।।
जन संख्या आज, जोरो में बड़ी ।
अघीन देखो, फदीत घड़ी ।।
समय को छ, ढुली पुकार ।।
मन में कारा, तुम बीचार ।।

# उद्योग-धन्दा

सुणि लिया भाई बन्दो, य मेरी अरज
पवतीय किताबें की, के भली तरज
पेंलि बात लेखी दिनु, ध्यान धरी लिया
गौनू-गौनू बटो नान, स्कूल पढाया

में लै कि पढीयो नाथी, न बुधी न ज्ञान
अबपढ़ मनुष्या, पशु का समान
पढ़े लिख्यी नान कणि, खेती लै सिखाया
नौकरी भरौसा पर, क्वे लै कि न रवा

नौकरकौये बखत के न रयौ मांन
नौकरी का पिछा पड़ी, हैजाबी हैराव
पढ़ी लेखी नान होला, खेती में छ सुख
पन लैगै खेति करो, क्येक होय दुख

जमीदारी कार भारी, समझण चेंछ
मेंहनतै की कमाई, में बरगत रेंछ
छन जीमी जाग भाई, के को होयो दुख
पढ़ी लेखी बेर नाथी, नौकरी में सुख

भारत में चली रछ, भूमि को सुधार
जैकी खेती भली होई, इनाम हजार
कारा बार भलो होयो, खेती मैं छ शान
अतीथो जो आई जानी, उनों दिया दान

# देवर – भाबी सम्बाद

दाद समझोण—समझोण रौनी ।
भोजी की समझ फिर लें नी आनो ।
दिक करछा दाज्यू के मेरा ।
कि डासि लाप तुमारा खोरा ।
जाँ न जा कयो ताँ बाकी जाँछा ।
नान भो को चार रिसाई रूछा ।
रतोया ब्याल घुमण बाँछा ।
टेड़ी नजर तुम मारछा ।
हाथ में घड़ी भौजी बादनो ।
ऐंन कांगुली जेब धरनी ।
बिलौज भौजी कौं कुहुना माथी ।
ढकिछ भौजी को आदुक छाती ।
सोल सिंगार भौजी बणौनी ।
घुमण तब बजार जानी ।
फंसन — फंशन भोजी पें केछ ।
फैंसन पर मरि मिटैं छैं ।
खुट चप्पल हाथ रूमाल ।
भौजीक फैंसनल कर कमाल ।
और वखत फंसन कें छैं ।
खाण बखत चुल कें चेछैं ।

# जवाब भाबी का

आज वखत एगई कास ।
तुम बुलांचाँ नान भौ जासा ।
तुम देवरा तस बुलाछां
उनु हैं बाकी तुम है रछा
सासु लै मेरी तुमु है बाकी ।
सासु सबोंकी हैछ पैं तसी ।
सासु में रेंगे पूरानी चाल
मैंकें बतैं छ पुराना हाल
फैसन देखीं सासु चिड़ें छ ।
पुराना फैसन तु पैर कं छ ।
आज फैसन चली रौ कासा ।
द्वोयै भै तुम कि भया तासा ।
दाद तुमार दिलदार हुना ।
दगाड़ा हम घुमणा जाना ।
फैसन पैरी दगाड़ जाना ।
स्वर्ग की परी एंगे छ कौना :
सोल सिंगार पैरन जब ।
दुल्हा दागड़ी छाजन तब ।
देवर मैं कैं तान सुनौनी ।
रातीया ब्याल जान भुरूनी ।

## -: जबाब देवर का :-

दाद हमारा सिघ सेकार ।
भौजी हमारा भौत होस्यार ।
भूठी न कौंनो त्यार सपथ ।
भूठ छ भौजी त्यौर रफत ।
आपणी जागा आपण कार ।
मतो न भुला न मन मार ।
भैंस पालनी घास काटनी ।
कार बार में जुटिया रौनी ।
खेती को कार सिखनी सब ।
भली छ बौड़ी कौना तब ।
फेसन देखी तुम बौई रछा ।
खेती को कार बजीजो कछा ।
भूठी नी कौनो त्यार सपथ ।
काम धन्ध को सिख रफत ।
सिखिलिया भौजी अकल आब ।
इज्जत तुमरी बड़ली तब ।
ईज बाब तुमारा सब छैं भाल ।
कथ गैं भौजी तुमरी अकल ।
अकल भौजी सिखणी अब ।
नकल तूमौंल छोणनी सब ।

# जवाब भावों का

कि आयो आज यस बखत।
तुमोकं है गो मेरो रफत।
पुरानी चाल तूमी में रंगे।
आज फेसन कतूक हैगे।

कान झुमुका चलोया भाल।
सुनै की जाम पीतल वाल।
मैं देखी देवर तब चिड़ंनी।
देवर मेरा छैं भौत भैमी।

भलैं जै हुनो यो मेरो खोर।
ब्या जै के हुनो तुमर घर।
भलै बै हुनो यो मेरो भाग।
नौकर बणौंन रोटी जै साग।

साड़ी मेसीनी बिलौज हुनो।
सिंगार दान धरोया रूनो।
आपण दगड़ा मैं कै घुमौना।
स्वर्ग की परी ऐ गछ कुना।

टेड़ी नजर मेरो लागनी।
दुल्हा दगड़ी भली छाजनी।
नान भौ कणी ऊन थामना।
बीस डबलिया पान चापना।

## —: जवाब देवर का :—

आज पें यसौ बखत चल ।
तुमौ बतैंछ भौजी अकल ।
मन में भौजी करी लिया ग्यान ।
तुमौ मिलाल श्री भगवान ।

न बौई रवा फैसन पार ।
घर आपण समावा कार ।
नाण नें घुण पूज लैं पाठ ।
घर राला तुमारा ठाठ ।

घर वाला सब भली बताला ।
भलो छ बौराण तुमौथें कौला ।
नाम तुतारो चलोंल तब ।
सिधी छ बौणी कोला पें सब ।

द्वौरानी जेठानी जतूक होला ।
भली छ बौराण तूमौथें कोला ।
झूठी नी कौंनौ त्यार सपथ ।
सिखीलिया भौजी भल रफत ।

सासू शौर की सेवा करला
अघिन तूमौं मेवा मिलेला
धरिया ध्यान सुणी लिया सब ।
फूलों का फल मिलाल तब ।

## —: उत्तर भाबी का :—

मेरी तूमों कें कस रफत ।
आज चली रो कस बखत ।
घर बाल मेंके तान सुनौनी ।
नर नारी का जोड़ा घुमनी ।
मेरा देवर के भया तासा ।
मैं देखो तुम चिड़िया रछा ।
काम न धन्ध बैठींया रनी ।
घर में आपण मौज उणौनी ।
मैंसूकें येतुक है रई पेच ।
देवर मेरा सूणनी क्वोंच ।
आज बखत के आयो यौसो ।
फैसन हैरो जगत बसो ।
सासु फैसन की बात सुनौ नी ।
खाणासू रोटा को गास नी दिनी ।
सोल सिंगार सैणी का होया ।
आज चेलिया कतूक भया ।
आपण मन मरिय रूछू ।
फैसन नी भै ज्यान भुरूछू ।
सुणौछा मैं कै हजारों बात ।
कैंकें सुणौनों दुखै की बात ।

## —: जवाब देवर का :—

सुणो लीया तुम आजो बतौनों ।
ज्ञान की बात तुम सूणौनों ।
पति सेवा छ सैणी को काम ।
अमर रोछ सैणी को नाम ।

ईनोंथैं तब लक्ष्मी कौनी ।
देवी कों रूप सब बतौनी ।
कतूक नारियाँ को नाम अमर ।
इन छैं आज सब अमर ।

द्रोपती और सूलोचना छीया ।
सीता जी और सावित्री भया ।
वेद ग्रन्थ पढ़ी लिया तुम ।
हजारों और नाम जै छन ।

पति चरण जो नारी छुनी ।
आखिर हुणी बैकुन्ठ जानी ।
नारी को हुँछ इज्जत भारी ।
फैसन लैं आज करी बैकारो ।

फिर लैं छन समझदार ।
पढ़ीया लेखिया भौत होस्यार ।
पढ़लिया तुम कर लिया ख्याल ।
भली कै तूमो मैंल बता हाल ।

## —: जवाब भाबी का :—

देवरा तुम भौत होस्यार ।
मैं कैं तुमौले कर लाचार ।
तुमरो बातों मानूल सब
खेतो कौ कार सिकूल अब
बात तुमौले भौत बतैंछैं ।
म्यार दिल में सब ऐगेछैं ।
तुमरी मेरी बहस भैई
म्यार दिल में ग्यान ऐगई
फैसन पर न बौई रौं मैं ।
तुमरी बात मानुलौ पें मैं ।
दाद तुमार सिघ सैकारा
तूम देवरा भौत होस्यार
आज मैं कणी एंगे अकल ।
न करौं आब कैकी नकल ।
तुमरी है जो अमर काया
मैं कै तूनूलै ज्ञान सिखायौ
सासु सौरों की सेवा करूल ।
स्वामी ज्यु का चरण छूल ।
ये बात कणी येती छोड़नौं ।
अघिन आब गीत जोड़नों ।

# फैसन परस्ती

बदलि गो भौत आब, आज को जमान
फैशन में फौंरी गई, बेइया का नान
पढ़िया लेखिया निछें, फेंशन बनोंनी
बोल चाल मजि लै कि फैशन द्यखोंनीं

पतलुन कोट पैनी, गावा में टाई
फौंरी रई फैशन में, न वचे कमाई
लम्बा लम्बा बालों कणि, पछिन करनी
पछिने की जेब पर, कांगुलि धरनी

हाथ पर घड़ी रैछा, माथी माथी चानी
नान ठुला आज सब, फैशन में रनी
घर माज चाहा बिना, हैरै हाई हाई
फशन ज्यादा हैगौ, क्ये निथें कमाई

फैशन व्ययसन मजि, फौंरी गया आब
सुणि लिया भाई-बन्दो हाल चाल सब
फेंशन कें कम करा, बांकि करा काम
अन्न धव खूब हौलो, भारत को नाम

दली हैछ दाल भाई, दली हैछ दाल
आब तुमों सुणोंनों मैं, अघिना का हाल

# नारियों का फैसन

हाथ में चूड़ियां पैरी खुट में चप्पल
रेशमियां साड़ि पैरी बुट भाल भाल

कान पार कनफूल आंखा में सुरम
कमर तांगड़ी रेंछ ध्वति न ख्वारम

हाथों में मेंहदी रचीं नाखूनों में लालीं
लटी में रीबन चेंछ जनजीर तालीं

आंगड़ी को रिबाज छुट बिलौउज हाप
तीन पाट पेटीकोट चली रया आज

किमतीया साड़ी पैरी काव पर बुन्दा
किरीम पौडर चेंछ साड़ी को पें फन्दा

जेब में रुमाल चेंछ हाथ पार घड़ी
खांण पिण भ्रन मिलो फैशन गौ बड़ी

ऊची एणी चप्पल पें - थोव रनी लाल
रात दिन बणोंनी पें - श्रगार जै बाल

आंखा काजल लगै कान कनफूल
पोडर चपोणी बेर क्वे बताला धूल

चुणियां पें चली रई मोतियों का जेणिया
बालों पर चमकनी-किलिप बढ़िया ॥

जमाना का अनुसार–फैशन में रनी ।
बोलचाल माज लैकी फैशन दिखोंनी ।।

पुराण रिवाज छूटा नई–नई चौल ।
हाथों में मेंहदी लगं–नाखून पै लाल ।।

चमकनी तंबखत घुंगुराल बाल ।
बदली जेंछ उनरो पें, हिटणे की चाल ।।

मडुवे की धुसी बाबू–मडुवे की धुसी ।
आपण जोभाना देखि आफी रया खुशी ।।

खांण लैकी भौल चेंछ, घी मसाला दार ।
साग पात दाल भात चाटनी अचार ।।

थोड़ा दही मगैंलिनी, टपकीया न्यार ।
पतो का दगाड़ा तब, करनी प्यार ।।

नान ठुला सेंणि मेंस, सब पें फैशन ।
कसिक काटला भाई अघीना का दिन ।।

सुणिलिया भाई-बन्दो धरीया पें ध्यान ।
अघिन कै लेखनों मैं, बुद्धि अनुमान ।।

सबों हुणी हाथ जोड़ी जंहिन्द जैंराम ।
कुमाऊँनो गीत म्यरो, लेखण को काम ।।

दो० खत लिखता हूँ, खतावार हूँ ।
मैं भी तुम्हारी याद में, मरने को तैयार हूँ ।।

❀ ❀

दो० भौंरे ब्याकुला मधु बिना, कोकिला बिन बसन्त।
मैं ब्याकुल तुमारेबिना सुआ जाने वही भगवन्त।।

❀ ❀

दो० नदि किनारे तिन वृक्ष, हैं इमली आम खजूर ,
पन्द्र पैसा खरच करना, पत्र देना जरूर ।।

❀ ❀

दो० बाग में घुमता हूँ, मालि न समझना ।
कविता लिखता हूँ, खाली न समझना ।।

❀ ❀

दो० नदि किनारे तिन वृक्ष, बरगद पीपल आम ।
उनके नीचे तीन तस्वीर, सीता लक्ष्मण राम ।।

❀ ❀

दो० बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसा पेड़ खजूर ।
पन्छी को छाया नहीं, फल लगे अतो दूर ।।

❀ ❀

जोड़– देश बटी चड़ी उड़ी हरिया रंगे की ।
तु सुवा इकलि ऐछै कां गैछ संगकी ।

❀ ❀

गीत– घना डाकै की गाड़ी मां २
तु किलै नि आई घना डाकै की गाड़ी मां ।
कां गैछ छ संगकी -२

## ** जोड़ गीत **

दोहा– सदा भवानी दाहनी, सिद्ध करे गणेश ।
पांचों देव रक्षा करें, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

दुतारो का तार नीमुवा अचार ।
श्री गणेश ज्यु हुणी पैली नमस्कार ॥
किले हैछ आज येतुक हा हा कार ।
जिरया–जिरया तुम धरती को चार ॥

* * *

वली छपें काली गंगा पली छ पनार ।
चित कणी शान्त धरिया बुद्धि अनुसार ।
गीत झोंडा लेखि दिनों भगनौला चार ।
पढ़ी बेर समझो लिया जो समझदार ॥

* * *

देवी भगवती भवानी जो समझुदार २
माता भवानी भगवती जो समझदार २

* * *

दोहा– साच बरोबर तप नहीं, झुठ बरोबर पाप ।
जांके हृदय साच है, ताके हृदय आप ॥

* * *

भारत की पवित्र भूमि यो भूमि महान
गांधी गौतम जासा पेद भई भारतें को शान
नेहरू पण्डित् जास पन्त ज्यु छिया विद्वान
सुभाष चन्द्र बोष जसा यो भारतें की महान

पाकी गया दाया पानी में पकाया ।
यों दिन यों मास तुम भेंटन रैंजया ।।
सोबरनै की माया है जो अमर काया ।
चिट्ठी में जुबाब दिया बादुवो में माया ।।

---

बांसुली का बीन राजा हरिचन ।
दुख: सुख जेलै होला कया कैथें भन ।।
लागो रया कार बार तुम घर पन ।
अमर है जया तुम जासा गोपीचन ।।

---

काट हालो खैर—जोड़ीदार काटो हालो खैर
द्वी दिन बचण होयो कि करन बैर
देबी भारत की माता कि करण बैर-२

---

सुर—सुर बयालो पड़ी हपुर धार में
के हुँछ फिकर करो जे होलो भागें में

---

असकोट बंग्याल बटी धारचूल देखीन
करम रिखड़ो पर क्या-क्या छ लेखीन

---

गीत- देबी भगवती भवानी तीलै धारौ बौला
देवी क्या-क्या छ लेखीन तीलै धारौ बौला
देबी दुरगा भवानी तालै धारौ बौला
माता पहाड़ौकी को तोलै धारौ बौला

## तर्ज जोड़ में- ** सालि भीना सम्बाद **

दो० बाग में फुल खीलगया गुलाब का,
पत्र देने का काम तुम्हारा ।

—❀—❀—

ताल कान भुपभुपी म्यारा, मांल कान बाई,
तुम म्यार रंगील भिना, मैं तुमरी साई ।

—❀—❀—

दो० वर्षा बर्सी रात में, भीगे सब बन राई,
घड़ा न भरे नीर से, पन्छी प्यासा रहजाय।

—❀—❀—

चम्कनी थावी साई, चम्कनी थावी,
मैं तेरो हैसिया भिना, तु हैसिया सांवी ।
नाख में नथुली छाजो त्यार, कानों छाजी बाई ॥

—❀—❀—

दो० धीरे धीरे रेमना, धीरे सब कुछ होय,
माली सींचे सौ घड़ा ऋतु आये फल होय ।

—❀—❀—

कुकुर भुकनो भिना, कुकुर भुकनी,
तुमों जसा मैं पछिन, कासा कासा भुकनी ।

—❀—❀—

गार ला पथर मिलोला, कास कासा भुकनी,
भिना घ्युला की खिचड़ी पकोंला २ ।

तली मली ताल साई, तली मली ताल,
खै बेर दमुवा है रैंछ, मोटै बेर लाल।
न बोलनी तु झन बोले, मैं त्यर मलाल॥

गार ला पत्थर मिलोंला, मैं त्यार मलाल
साई घ्यु ला खिचड़ी पकोंला २

तल खेत सायौ, मल खेत बायौ,
ओंन जं को छियो, मैं त्यर बुलायौ।
खै कसो भरोस दिछैं, आजो लै न खायौ,

आँखि बुजी मैं देखेंछ, मेल भरी पाय,
म्यर हन्स त्वै में छ, मैंलै भरी पायौ।
म्यर हन्स त्वै में छ २

तिमली कौ पात भिना, तिमली कौ पात,
घौ दिन काटन हैरीं मैंकैं, घौ काटनी रात।
बेटेंम भेट हैछ भिना, क्या द्यों तुमार हात॥

मरचे की कोसी भुली, मरचे की कोसी,
मैं छौं बली मायादार, तु छे ढोसो-ढोसी।
अघिन पछिन रनी म्यार, त्वै जसो कसी कसी॥

चौमसिया छनी भिना, चौमसिया छनी,
जब औंनी बुर दिना, खास लै आपण भिना,
मूख फरो जानी।

## —: गीत :—

बीस को तुम बाईसा, ज्वड़ कि मिलो झक,
व फेरी जानो, तब ज्वड़ कि मिलो झक-२ ।

—❀—❀—

पाकी गई दाया, पानी में पकाया,
इन दिन इन मास, भिना भेटनै रै जाया
चिट्ठी में जवाब दिया, बाटुवी में माया,
ज्वाड़ कि मिलो झक, बाटुवी में माया,
ज्वड़ कि मिलो झक ।

—❀—❀—

० ऊँचे महल से निकली गोरी, रंग महल को जाती थी,
हरे दुपट्टे से ढकती नैना, लोगों को तरसाती थी।
रंगरूपकी झलकदिखाकर, मतवाली चाल चलती थी,
चंचल नैनों से करे इशारा, अपने पास बुताली थी ।

—❀—❀—

चार ढुंगा की चौतरी, चार बड़ के पात,
चार घड़ा शहद का, किस में डालों हाथ।

—❀—❀—

दो० गार ला पथर मिलों कि में डालों हात २
बली घ्युला खिचड़ी पकोंला २ ।

# देवर भाबी सम्वाद

दो० फुल है गुलाब का, सुगन्ध लेती रहना
पत्र है गरीब का, उत्तर देती रहना ।

—❀—❀—

जोड़— दतइया दात देवरा, दतइया दात,
न धोके धिनाई खाई, न चुपड़ौ हात ।
साथ है जो जोड़ी की पै, लामी हैजो रात,
भाल छैं नान तिन तुमार, भली कुशल बात।

—❀—❀—

निमुवा अनार बोजी, विमुवा अनार,
कैलै पावोया कैले सेंतिया तुम छा भलीं होश्यार।
चार गोत सुणै जावा, तुम सिल सिलेवार ॥

—❀—❀—

घा काटनो साज देवरा, घा काटनी साज,
तुमरो मुखड़ो मैली देवरा, तुमों क्या होछ आज

—❀—❀—

भैंसो नौं छ बोंनी बौजी, भैंसी नौछ बोंनी,
घरवाई मैत जारै, एकली पराणी ।
बौजो मैं सजं नी औंनी बोजी॥
बड़ भारी दुख छ मैं कं, कनी नि औंनी ॥

भली हमरी जन्म भूमि, ऊँचा-ऊँचा पहाड़,
की भाला लागनी, हमों यों गधेर गाड़।

—✽—✽—

गाड़ पानी सुखि गैछ, लुकुड़ी धोयेल,
तेरी मुखड़ी वेलै गैछ, राता का रोयेल।
राता का रोयेल सुआ, राता का रोयल॥

—✽—✽—

लैंनी भैंसो उतै गैछ, बाखड़ी न सौंनी,
तु त मेरी नद हैंछैं, मैं तेरी पौंनी।
तसितु सरमदार छित, घरैं बटी नोऔंनी॥

—✽—✽—

धार में की शील लोंडा, धार में को शील,
मैं भली लोंडिया छोंपें, तु भलो डिबल।

—✽—✽—

निमुवा अनार बली, निनुवा अनार,
भली छ अकल, बर निकि छ होस्यार।

—✽—✽—

बगीच को माली, गोठ गोरु झाली,
प्यार मन बोत्या जाये, पै जथैं कै जाली।

—✽—✽—

झगुली को फेर सुआ, जगुली को फेर,
त्यार मन बोत्या जोंल, भो दूध दिबेर।

देबी दुर्गा भवानी, तिलैधारो बोला ।
माता पहाड़ को, माता तिलैधारो बोला ।
जबरुवा जाम, ग्यों सुकाया घाम,
पांच भाई पाण्डव भया, चार भाई राम ।
अमर छै आज भाई, राम ज्यू को नाम,
देखी तब चतुराई, औलखि का नाम ।
क्यैके औंछ जड़ काम, क्यैके चुक काम,
काठ काम औंछ भाई, चन्दन समान ।
क्यैके औंछ फूल काम, क्यैके पात काम,
राम नाम जपा सब, जपा सुबे शाम ।
धार में देवी को थान, फूल चढ़ोंनो पाती,
भली दिया बुद्धि, भली दिया मती ।
दया दिया दिल में, भल दिया ज्ञान,
मन मेरो शान्त है जो, तुमरो छ ध्यान ।
प्रेमक बोल दिया, भली दिया बाणि,
ध्यान धरी दिया देबी, गरीबों उजाणि ।
गीत–देबी दुर्गा भवनी तिलैधारो बोला,
माता पहाड़े की, माता तिलैंधारो बोला ।
तलि मलि सार हपुर हपार, लाला की बजार,
जोरया बचोरया गींदार हेवार, घरतीं की चार ।
गानेरों सुननेरों हुनीं, मेरीं नमस्कार ।

## —: जोड़ - गीत :—

दो०—फूल फूले गुलाब के, भलीं आई बहार ।
राम राम मेरीं आपको, राम-राम बार बार ।

—❀—❀—

दो०—फूल खिले हैं अच्छ-अच्छे, खिले हैं गुलदस्ते ।
आपकीं राम राम को मेरी, बार-बार नमस्ते ।

—❀—❀—

दो०—खुशबू भरी गुलाब कीं, पड़ीं चारपाई के पास ।
मिट्टीं हमारी यहाँ रहीं, प्राण तुम्हारे पास ।

—❀—❀—

दो०—खत लिखती हूं मैं आपको, कालीं स्याही से ।
प्यार मेरा तुमसे है, तुम्हारीं भलाई से ।

—❀—

दो०—नदीं किनारे राखड़ा, धोबीं कपड़ा धोय ।
तुय तहां मैं यहां, भेट कहाँ से होय ।

* * *

दो०—तारे भए डग मग, चांद भई भरपूर ।
आप मुझे चाहते हैं तो, क्या नजदीक क्या दूर ।

* * *

दो०—मथुरा बन कीं लाकड़ी वृन्दाबन को घास ।
ना तुम्हारा चिट्ठीं पत्र, ना तुम मेरे पास ।

* * *

दो०—बृन्दाबन की लाकड़ीं, मधुबन कीं घास ।
तुमने छोड़ा आना-जाना, मैंने छोड़ी आस ।

दो०–पहले केस खिचाय के, पीछे फड़ाये चीर ।
आये लाज गवाई के, आखिर तो जात अहीर ।

❋ ❋

दो०–नदी किनारे तीन वृक्ष हैं, इमली आम खजूर ।
पचास पैसा खर्च करना, पत्र देना जरूर ।

❋

दो०–बाग में घूमती हूँ, माली न समझना ।
आपसे मैं प्यार करती हूँ, खाली न समझना ।

❋ ❋

दो०–भौरे व्याकुल मधु बिना, कोकिल बिन बसन्त ।
मैं व्याकुल तुम्हारे बिना, न जाने वही भगवन्त ।

❋ ❋

दो० पत्र लिखती हूँ प्यार से, मजाक न समझना ।
मांगती हूँ निशानी तुमसे, इनकार न करना ।

❋ ❋

दो०–करनी करके कर चुके, करके क्या पछताय ।
बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाय ।

❋ ❋

जोड़–लसि पसि खीर, लसि पसि खीर,
कसिक भुलूला, बली तेरी तसवीर ।

❋ ❋

सेरि में उज्याड़ खायौ, सफेद घोड़ी लै ।
जवानो नसि जालो, कि होलो जोड़ी लै ।

# तर्ज - कैल बजै मुरुली

कैलै बजै मुरुली वो बैणां ऊंची नीचो डानी मा ।
स्वामी मेरा परदेश मैं लाग छ निशास ।
ओ बैणा मैं लागछ निशास २

कैलं बजै मुरुली ओ बैणा धोपरी घामै मा
मैं लाग निशास ओ बैणा स्वामी ज्यू की याद मां ।
कैलै बजै मुरुली ओ बैणा ऊचो नाची डानी मा ।
म्यार मैतै को भगवता तु दैणी है जाये ।
कुशल मङ्गल मेरा स्वामी घर लाये २ ।

कैलौ बजै मुरुली ओ बैणा धोपरी घामें मा ।
मुरुली को स्वर सुणी हिय भरी ओंछ ।
स्वामी ज्यू को याद दिल दुःखी हू छ ।

ओ बैणा कैलौ बजै मुरुली यो धोपरी घामैं मा ।
काट हाछ घास स्वामी मेरा परदेश ।
मैं लागछ निशास ओ बैणा २
कैलौ बज मुरुली ओ बैणा ऊंची नीचो डानो मा ।

मैं लाग छ निशास, स्वामी की याद मां ।
स्वामी की याद मा, स्वामी की याद मां ।
ओ बैणा ओ बैणा स्वामी याद मा २ ।

# गीत-बेड़ू पाको बारा मासा

—❀—❀—

बेड़ू पाको बारा मासा हो नरैणा
काफल पाको चैत मेरी छैला २
रूमा झूमा दिन एगि हो नरैणा
पूजा म्यारा मैता मेरी छैला २

अल्मोड़ा की लाल बजारा हो नरैणा,
लाल मांटे की सीड़ी मेरी छैला।
आपों खानी पान सुपारी हो नरैणा,
मैंकैं दिनी बीड़ी मेरी छैला- २

नैनीतालैं की नन्दा देबी हो नरैणा
फूल चढ़ौनी पाती मेरी छैला २
जसो करो त्वै सुवैलैं हो नरैणा
धन मेरी छाती मेरी छैला २

बेड़ू पाको बारा मासा हो नरैणा
काफल पाको चैत मेरो छैला
हल्द्वानी का ताला टूका हो नरैणा
सिटी स्टेशन मेरो छैला २

आज भौत बड़ी गई हो नरैणा
फैंशन बेसन मेरी छैला २

## गीत- ओ परुआ बौज्यू

—❀—❀—

ओ परुवा बौज्यू चप्पल के ल्याछा यस,
फट-फटा नो हुनो—चप्पल के ल्याछा यस।

ओ परुली ईजा तू कस मांगें छ कस,
धन त्यौंरो मिजाता तू कस मगैछ कस ।

ओ परुवा बौज्यू, धमेली के लाछा यस,
ओ परुवा बौज्यू—धमेली के लाछा यस २

ओ परुली ईजा तू कस मगैछै कस,
धन तेरो मिजाता तू कस मगेंछ कस।

ओ परुवा बौज्यू बिन्दुली के लाछा यस
चम चमै नीहुनी बिन्दुली के लाछा यस।

ओ परुली ईजा तू कस मगैंछ कस,
धन तेरा मिजात तू कस मगैछें कस।

ओ परुवा बौज्यू घाघरी के लाछा यस,
न बुटा न पाटा घाघरी के लाछा यस।

ओ परुली ईजा तू कस मगैछै कस
धन तेरा मिजात तू कस मगैछै कस ।

ओ पारुवा बौज्यू तस के बुलाँछा तस।
ओ हरुली ईजा पें कस करु मैं कस ।।

## गीत–साली भिना - मालू न काट

पारक भिड़ा को छैं घस्यारी ।
मालू ये तु मालू न काटा मालू - २
पारका भिड़ा मैं छु घस्यारी ।
मालू रे तू मालू काटन्दे मालू -२
मालू काटण पाप लाग छौ ।
मालू ये तू मालू न काटा मालू २ ॥
भैंसी ब्यै रैंछ थोरी है रैंछ ।
मालू ये तू मालू काटन्दे मालू २ ।
त भैंसी तेरो भ्यौल घूरी जाली ।
मालू ये तू मालू न काटा मालू २ ।
थोरी छ मेरी दोदी कै प्यारी ।
भैंस छ भागी मैं कणि प्यारी २ ।
के छना त्यारा दीदो को नामा ।
तैंक मरद के करू काम २ ।
दीदी को मेरो नाम दुलारी ।
धनसिंह भिना त्यारी अन्वारी ।
नक नें मान मैल दी गाई ।
धन सिंह मैं छू तू मेरी साई ।
पाराक भीड़ा को छं घस्यारी ।
मालू ये तू मालू काटी ले मालू ।

## गीत की तर्ज-रुपसा रमौती घुँगरु नबजा छम

रुपसा रमौती घुंगरू न बजा छम छम छम ।
जागीजा माठमाठु जोंला, हमले आनो हम २ ॥

जोड़-१-तेरी गला मूंग की माला, चमकनी जंजीर
तेरो मेरी भेंट होली, देवी का मन्दिर ॥

रुपसा रमौती घुंगरू न बजा छम छम ।
देबी का मन्दिरा घूंगरू न बजा छम ॥

२-घस्यारी लै घास काटो, सेरी का पयान ।
जो बीती मनामां बीती, के कौनु बयान ॥
चिट्ठी पड़ होया में धारनु, लिफाप सिरान ।

रुपसा रमौती, घूंगरू न बजा छम ।
लिफाप सिरान, घूंगरू न बजा छम छमा ॥

३- मोहरी दरबाज माजा लगै हालौ रन्दा,
तेरी मेरी पीरीता कौ कसौ पड़ौ फन्दा ।
त्वे सूआ सम भोनो, बटुली है बन्द

रुपसा रमौती घूंगरु न बजा छम छमा ।
बांटुवी हैं बन्द, घूंगरू न बजा छम ।

४-सूआ सुआ हैई रैछ, पाणि कसि तीस,
झन हो कभै तेरी उमर, बीसै की उन्नीस ।
तेरी मामा लागीये रंजो, पांणि कसी तीस ॥

## जोड़ गीत की तर्ज—कैल बजै मुरली

कमला तू रोये ना, ऊँची विची डानीं मां ।
कमला तू रोये ना, ऊँची निची डानीं मां ॥
आंसू बहाये ना, सुरमेली आँखिना ।
आँसू बहाये ना, सुरमेली आँखिना।
कमलातू रोये ना, ऊँचा निचीं डानी मां २
आँसू बहाँये ना, रुपसि गाली नां
गाली भिजाये ना, आँसू बहाये नां
कमला तू रोये ना, ऊँची निची डाची मां २
सुरमा बहाये ना, आंसु गिरये ना ।
आंसु गिराये ना, सुरमा बहाये ना ॥
कमला तू रोये ना, ऊँचीं निची डानी मां २
छाती भिजाये ना, आंसू गिराये ना ।
कमला तू रोये ना, सुरमेली आंखी ना ॥
कमला तू रोये ना, ऊँची निचीं डानी मां २
आंसु गिराये ना, गालीं भिजाये ना ।
कमला तू रोये ना, कमला तू रोये ना ॥
कमला तू रोये ना, ऊँचीं विची डानी मां २
बांदुली लागेए ना, आंसू बहाये ना ।
रुपसि गांली मां, रुपसि गालो मां ॥
कमला तू रोये ना, आँसु बहाये ना २

## गीत पुराना

## तर्ज-तु किलै निआई धना, डांकेको गाड़ी मां

दूध पियो पोरे बेर, दै खायो परार
क्या तेरो कोल छियो, क्या तेरो करार।

—•—•—

धना डांके की गाड़ी मां २
तु किलै नि आई धना डांके की गाड़ी मां

धानो को मझल खेत चाड़ी हाला स्यारा
त्वे सित बिताई मैंलै लोंडिया उमरा

धना डांके को गाड़ी मां २
लौंडिया उमरा धना डांके की गाडी मां

दूध पियो बिरा विलै दै खायो मांखि लै
कास कास झुकाया त्वैलै, आपनी आंखि लै

धना डांके की गाड़ी मां
आपनी आंखि लै धना, डांके को गाड़ी मां।

—•—•—

धनिया को बियो, कि त्वैलै मापियो
सुआ कि मैंलैं न दियो
बली कि मैंलै न दियो

दो॰ जाको राखे सइया, मार सकै न कोई,
बाल बाका न कर सके, जो जग बैरी होय।

—❀—❀—

दुतारी का तार – भोलिया कौ हार
निमुवा अनार – औंनै रना दिन मांस

—❀—❀—

औंनी रौ बहार बहार जंहिन्द जै राम
मेरी करीया स्वीकार

—❀—❀—

दो॰ सदा भवानी दाहनी गौरी पुत्र गणेश
पांच देव रक्षा करें, ब्रह्मा बिष्णु महेश

—❀—❀—

रंगदार धोती बलीं रंगदार धोती
मायादार मैलै छिपै तु छैं अनहोती
बलीं तु छैं अनहोती

—❀—❀—

पिसिया डालीं कौ सुवा पिसिया डालीं कौ
दूध मिठौ गिलास में कौ
दै भलौ थालीं कौ
सुवा दै भलौं थालीं कौ

—❀—❀—

दो॰ तारा भये गगन मंडल जून भई भरपूर
पृथ्वीं में प्रकाश जिसका कोटि करोड़ों दूर

## झोड़ा-तर्ज— गोरी गंगा भागारथी कै भौलौ रेवाड़ ।

गोरी गंगा भागरथो के भौलौ रेवाड़ा । २
हाई-हाई खोलदे माता खोल भवानी धरम केवाड़ा ।
के ल्यारैछै भेट पखोवा, के खोलो केवाड़ा ॥

फूल पुष्प भेंट लेरयों, खोल माँता केवाडा ।
गोरी गंगा भागरथी, के भौलौ रेवाड़ा ॥

हाई-हाई खोलदे माता, खोल भवानी धरम केवाड़ा ।
के लेरैछ भेट पखोवा, के खोलो केवाड़ा ॥

धुप अगरबत्ती लैरयौं, खोल माता केवाड़ा ।
पान सुपारो, मेवा लैरयौं खोल माता केवाड़ा ।

पूजा कौ सामान लैरयौं, खोल माता केवाड़ा ।
धप्कना निसाण लैरौं, खोल माता केवाड़ा ॥

गुरजना नगारा लैयू, खोल माँता केवाड़ा ।
गोरो गंगा भगरथी, के भौलौ रेवाड़ा ॥

हाई-हाई खोल दे माता, खोल भवानी धरम केवाड़ा ।
के लैरैछ भेट पखोवा, के खोलो केवाड़ा ॥

सुनो कौ छत्तार लेरयों खोल माता केवाड़ा ।
गोरी गंगा भागरथी के भौलौ रेवाड़ा ॥

## झोड़ा—तर्ज—बनाने से ही बनती है

भोल करये देबी वे दुर्गा माता
भोल करिये २
भोल करिए देबी वे दुरगा
माता भोल करिये ।
भोल करिये, भगवती भवानी
माता भोल करिये ।
भोल करिये, त्यारा पें सेवक
हम भोल करिये ।
भोल करिये, तु हमरी ईस्ट
माता भोल करिए ।
भोल करिए, दोपाई चौपाई
माता भोल करिए ।
भोल करिए धप्कना निसाण
ढोंला भोल करिए ।
भोल करिए गुजरचा नयरा
देबी भोल करिए ।
भोल करिये, छत्तर की छाया
तेरी भोल करिए ।
भोल करिए देबी वे दुर्गा
माता भोल करिए ।
भोल करिए भगवती भवानी
माता भोल करिए ।

# झोड़ा पुराना

## तर्ज-गोरी धना तिलै धारौ बोला

गोरी धना-तिलै धारो बोला
यो सो राम्पती-तिलै धारो बोला।
गोरी धाना दुतारी का तारा।
यो सो राम्पति-दुतारी का तारा ॥
गोरी धना जीरया-जागी।
यो सो राम्पती धरती की चारा ॥
गोरी धना निमुआं सानना।
यो सो राम्पती नीमुआ सानना ॥
गोरी धना—किलै न बुलाना।
यो सों राम्पती नक न मानवा ॥
गोरी धना, तिलै धारो बोला।
यो सो राम्पती तिलै धारो बोला ॥
गोरी धना टोपरी दी बुनी।
यो सौं राम्पती टोपरीं दी बुनी ॥
गोरी धना-दयाली है जाना।
यौं सौ राम्पती, गुरु ज्यु की धुणि ॥
गोरीं धना, घा काटो हरीया।
हाई-हाई राम्पती घा काटो हरीया ॥

गोरी धना मडुवैं कीं पोरी ।
यौ सौ राम्पती मडुवै की पोरी ॥

—❀—❀—

गोरी धन न हुनी माया दार
यो सौ राम्पती न फुटनी खोरो

—❀—❀—

गोरी धना दली हैछ दाल ।
हाई-हाई राम्पती दली हैछ दाल ॥

—❀—❀—

गोरी धना जोड़ा सित लटकेंछ
हाई हाई राम्पती, पुछि अैछ काला

—❀—❀—

गोरी धन मेंकणि दिजाये ।
यौ सौ राम्पती हाथ रुमाला ॥

—❀—❀—

गोरी धना तिलै धारौ बौला
हाई राम्पती तीलै धारौ बोला

* * *

गोरी धना, फोड़नी अोखोड़ ।
हाई-हाई राम्पती फोड़नी अखोड़ ॥

* * *

गोरी धना अघीन जोड़ा पें
हाई-हाई राम्पती, भला भला जोड़ा ।

## झोड़ा की तर्ज

## जेंतुली बोरें रौ की वे जेंता तिलै धारौ बौला

जेंतुली बौरें रौ की वे जेंता ।
तिलै धारौ बौला २

दिबानी लोंडा दोरी हाटें कौ ।
तिलै धारौ बौलौ २

घा काटौ हरीयौ — लोंडा ।
घा कौटौ हरीयौ २

मनो तु छै मनी में छों ।
माया कौ मरीयौ २

माया कौ मरो हौ लोंडा ।
माया कौ मरीयौ २

जेंतुली बोरें रौ की वे जैता ।
माया कौ मरीयौ २

सिड़ि हालौ कोट वे जैता ।
सिड़ि हालौ कोटा २

म्यार लाया पिछौड़ि कौ ।
में सु लेंछै ओट २

मेंसु लेंछैं ओट वे जेंता ।
मेंसु लेंछ ओटा २

जैंतुलो बौरं रौ की वे जेंता ।
तिलै घारौ बोला २

हाई-हाईदिवानी लोंडा दोरीहाटै कौ
तिल घारौ बोल २

बोतलौ कौ काग—वे जेंता ।
बोतल कौं काग २

रुमाव में रौटा लाये ।
गिलास में साग २

गिलास में साग वे जेंता ।
गिलासा में साग २

जेंतुलो बौरै रौ की वे जेंता ।
गिलास में सागा २

दिवागी लोंडा दोरी हाटै कौ ।
तिलै घारौ बोला २

दुदा का गिलास में, पड़ी गैछ माँखि ।
म्यार औरैं ज्यान–२ तू मारेंछै आँखि ।।

तु मारेंछ आखि वे जेंता ।
तु मारेंछै आखि ।।

## झोड़ा तर्ज— हल्द पिसौ मर्च पिसौ । धनियाँ छाजो रैतै में २

हल्द पिसौ मर्च पिसौ ।
धनियाँ छाजो रैतै में २
शौरूपें की शाणि पैरीं ।
लटकी रैछै मैंतै में २

हल्द पिसौ, मर्च पिसौ ।
धनियाँ छाजो रैतै में ।।
धानों को रोपाई हैरै ।
लटकी रैछै मैंतै में ।।

मडुवा गोड़ाई हैरै ।
लटकी रैछै मैंतै में ।।
हल्द पिसौ, मर्च पिसौ ।
धनिया छाजो रैतै में ।।

सुनौ कौं जेवर पैरी ।
लटकी रैछै मैंतै में ।।
कांचा का चुड़िया पैरी ।
लटकी रैछै मैंत में ।।

गोरु भैंसा घा न दिनो ।
लटकी रैछै मैंतै में ।।

## झोड़ा-तर्ज

## अब खा माछी

अब खा माछी बिन माछी न खानों ।
केंछ अब खा माछी २
आब खा माछी पोतिया पतेली रेंगे ।
आब खा माछी – २
आब खा माछी – पिसिया मसाला ।
रेंगि – अब खा माछि २
अब खा माछि–बिना माछि न खानो ।
केंछै आब खा माछि २
अब खा माछि – धरोया अध्याम ।
रेंगं आब खा माछि २
आब खा माछि पकाया का रोटा ।
रेगी – अब खा माछि २
आब खा माछि–बिन माछि न खानों ।
केंछै आब खा माछि २
आब खा माछि – मछयों को मुडा ।
माछो आब खा – माछी २
आव खा माछि–बिन माछि न खान ।
केंछि आब खा माछि २

## तर्ज झोड़ा

**बैठ डोली में बटी गै बराता**
**चेली बैठ डोली में २**

बैठ डोली में बटी गै बराता ।
चेली बैठ डोली में ।।

बैठ डोली में, दुनियां की रीत ।
चेली बैठ डोली में ।।

बैठ डोली में, जीरये–जीरये ।
चेली बैठ डोली में ।।

बैठ डोली में बरश हजारा ।
चेली बैठ डोली में ।।

बैठ डोली में, फली जाये ।
फुली जाये, बैठ डोली में ।।

बैठ डोली धरती की चार ।
चेली बैठ डोली में ।।

बैठ डोली में चेली लै ।
शौरास जाण बैठ डोली में ।।

बैठ डोली में, ग्यो मडुंबा घट ।
चेली बैठ डोली में ।।

बैठ डोली में, बटी गै बरात ।
चेली बैठ डोली में ।।

## तर्ज झोड़ा :- जावी मोहरी घाम अैगछ

जावी मोहरी - घाम अैगछ ।
जुहारी रौतेला, छोड़ो धम्याला ।।

लटी लुछेली, फुना टुटौल ।
जुहारी रौतेला, छोड़ो छोड धम्याल ।।

छोड़ी दे भागी, छोड़ धम्याला ।
जुहारी रौतेला, छोड़ धम्याला ।।

इजू देखली, गावी ठोकलो ।
छुहारी रौतेला, छोड़ धम्याया ।।

छोड़ी दे भागी, छोड़ धम्याला ।
गुहारी रौतेला, छोड धम्याला ।।

बाब सुणाला, लाल पवूरी ।
जुहारी रौतेला, छोड़ धम्याला ।।

जावी मोहरी, घाम अैगछ ।
जुहारी रौतेला, छोड़ धम्याला ।।

दाद सुणाला, हौला नाराज ।
जुहारी रौतेला, छोड़ धम्याला ।।

छोडी दे बली, छोड़ी धम्याला ।
जुहारी रौतेला, छोड़ धम्याला ।।

## तर्ज झोड़ा

### -झन दिया बौज्यू, बिलौरी माया-

झन दिया बौज्यू, शराबी बर ।
शराबी देखि लागेंछ डर ॥
मिलि जो चाहे, गरीब घर ।
सभ्य समाज, सभ्य हो बर ॥

भैंसा पालुला खेती कमोंला ।
मौजैले बौज्यू, शौराश खोला ॥
झन दिया बौज्यू, शराबी बर ।
मिलि जो चांहे, गरीब घर ॥

शराबी सब, ताना सुणोंनी ।
रात पें दिन, ज्यान झुरोंनी ॥
खेती को काम, जाणनों सब ।
कुलो को नाम, रोलो पें तब ॥

झन दिया बौज्यू, जुहारी घर ।
जुहारी देखि, लागेंछ डर ॥
दहेज बाला तुम, जन चाया
उनार घरों भूतै की माया ॥

गरीब हुछ, संतोष ठुल ।
सुणि लिया बौज्यू झन करा भूल ॥

मैं दिया बौज्यू गरीब घरा ।
शराबी देखी, लागैंछ डरा ॥

होला गरीब, मैंछों होस्यार ।
उनों सीकौंला खेती को कार ॥

तुमरो नाम अमर रौंल ।
म्यार जीवन, सफल होलो ॥

झन दिया बौज्यु शौकार घर ।
शौकासें देखि, लागेंछ डर ॥

सुणि लिया वौज्यू, धारीया ध्यान ।
बर पें चेंछ, चेली समान ॥

देखि सुणि बे चेली बेऊनी ।
दहेज वाला कास कास औनी ॥

न चेंण बौज्यु, लखपती सेट ।
जमार हुनि, ठुल—ठुल पेट ॥

झन दिया बोज्यू, शराबी घर ।
शराबी देखि, लागेंछ डर ॥

जो आला बौज्यू दहेज वाला ।
वृड़ बाड़ीं उनारा हुनी पगाला ॥

## ।। लेखक द्वारा प्रकाशित पुस्तकें ।।

१- बिजय भारत
२- पर्वतीय लोकगीतों की झलक
३- पर्वतीय लोक गीत
४- कुमाऊँनी रँगीले गीत
५- बालागोरिया व गंगानाथ जी का वर्णन
६- कुमाऊँ के लोक प्रिय गीत
७- सँतोषी माँ का वर्णन
८- कुमाऊँनी विवाह गीत
९- रंग रंगीले लोक गीत
१०- गंगनाथ देवता का बर्णन
११- पहाड़ी लोक गीतों का संग्रह
१२- समय की पुकार समाज सेवा
१३- गुरु गोरखनाथ जी की बिनती
१४- चौथा संस्करण बाला गोरिया ग्वेल देवता की अमर कथा
१५- देवर भाबी सम्बाद आज का फ़ेशन
१६- होली रंग रंगीली होली
१७- कुमाऊँनी गीत माला
१८- पहाड़ी लोकगीत की पुरानी झलक

सहयोगी प्रिन्टर्स, नवाबी रोड, हल्द्वानी